मुख्य परीक्षा

प्रश्नः- नीतिशास्त्र के अंतर्गत विभिन्न नैतिक अवधारणाएँ कौन-कौन सी हैं? इसके अंतर्गत 'मूल्य' को समझाते हुए 'बौद्धिक मूल्य' को विस्तार पूर्वक बताइए और अपने उत्तर के समर्थन में तर्क भी प्रस्तुत कीजिए।

(250 शब्द)

Which are the various ethical theories under ethics? Elucidating 'value' under it, explain elaborately the 'intellectual value' and also present your reason for your support.

(250 Words)

मॉडल उत्तर

- नीतिशास्त्र मानव जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण विषय क्षेत्र है, जो समाज में मूल्य आधारित संतुलन स्थापित करने में प्रभावी हो सकता है। नीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र की पाँच शाखाओं में से एक है। यह उपशाखा दर्शनशास्त्र विषय को भी प्रासंगिक बना देती है।

  नीतिशास्त्र का अध्ययन वस्तुतः नैतिक मूल्यों का अध्ययन है। इस संबंध में नीतिशास्त्र मूल्यों के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालता है और जीवन मूल्यों की समझ को व्यवहारिक बनाने में मद्द करता है। नीतिशास्त्र के अंतर्गत विभिन्न नैतिक अवधारणाओं में नैतिकता (Morality), धारणा (Belief), मूल्य (Value) और नीतिशास्त्र (Ethics) हैं।

  "मूल्य" नीतिशास्त्र की एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा है। मूल्य शब्द शैक्षिक विषयों में अर्थशास्त्र के मार्ग से होते हुए गुजरता है अर्थात् मूल्य की पहली शैक्षणिक व्याख्या अर्थशास्त्रीय सिद्धांतों में देखी गई है। मूल्य किसी भी व्यक्ति की भावनाओं और इच्छाओं की अभिव्यक्ति है। परन्तु, प्रत्येक प्रकार की भावनाएँ मूल्य में परिवर्तित नहीं हो पाती हैं। अतः व्यक्ति में विद्यमान वे भावनाएं, जो समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से भावनात्मक रूप से प्रधानता ले लेती हैं और किसी विशेष व्यवहार को इंगित करती हैं, मूल्य कहलाती हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति की भावनाएँ अलग-अलग होती हैं, अतः प्रत्येक व्यक्ति के लिए मूल्य भी अलग-अलग होता है: जैसे- हिटलर के समाजीकरण के कारण उसमें हिंसात्मक भावना की प्रधानता थी, अतः वह हिटलर का व्यक्तिगत मूल्य था। वहीं गांधी के समाजीकरण के फलस्वरूप अहिंसा की भावना की प्रधानता थी। अतः कहा जा सकता है, कि गांधी में अहिंसा का मूल्य था। अतः कहा जा सकता है कि मूल्य का एक स्वरूप व्यक्तिनिष्ठ होता है।

  इस प्रकार मूल्य व्यक्तिनिष्ठ होता है, वस्तुनिष्ठ होता है, मूल्य सापेक्षिक भी होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जैसे-जैसे व्यक्ति व समाज का विकास होगा, वैसे-वैसे नवीन मूल्यों की उत्पत्ति होती है। मूल्य की सापेक्षता को समाज और राष्ट्र के परिप्रेक्ष्य में भी देखा जा सकता है।

  नीतिशास्त्र के अंतर्गत 'मूल्य' को विविध प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है, जैसे-जैविक मूल्य, सुखवादी मूल्य, सौन्दर्यवादी मूल्य, बौद्धिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, आध्यात्मिक मूल्य आदि।

  मूल्य के विविध प्रकारों में एक महत्त्वपूर्ण मूल्य बौद्धिक मूल्य होता है। ज्ञान, ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया और ज्ञान के प्रभाव को दिया जाने वाला महत्त्व बौद्धिक महत्त्व कहलाता है। सामान्यतः जैसे-जैसे मनुष्य सभ्यता के पायदान पर ऊपर उठता चला जाता है, वैस-वैसे उसके लिए बौद्धिकता का महत्व बढ़ता चला जाता है। इस संदर्भ में हम कह सकते हैं कि वर्तमान समाज बौद्धिक मूल्य की दृष्टि से एक समृद्ध समाज है। जैसे-भारतीय शिक्षा व्यवस्था का उत्तरादायित्व इस सन्दर्भ में बढ़ जाता है, की बौद्धिक मूल्यों की दृष्टि से एक समृद्ध समाज है। जैसे-भारतीय शिक्षा व्यवस्था का उत्तरादायित्व इस संन्दर्भ में बढ़ जाता है कि बौद्धिक मूल्यों को संतुलित और संवृद्धि बनाने का कार्य शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। कुछ समकालीन विवादास्पद मुद्दे जैसे-यूथेनेसिया गर्भपात का मुद्दा, सरोगेसी का मुद्दा, पर्यावरणीय नैतिकता का मुद्दा इत्यादि बौद्धिक नौतिकता के विषय हैं।